2018-2019

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
February-2019 Special Issue –2

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor:
Dr. Rameshwar Bangad
Dr. Archana Pardeshi
Prof. Amar Alde
Navgan College, Parli-Vaijnath, Dist.Beed

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi),
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 800/-

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

38	21 वीं शती की हिन्दी दलित कविता – श्री ताला निरंजन	114
39	इक्कीसवीं सदी की हिंदी–मराठी आदिवासी कविताओं –गिर्हे दिलीप	116
40	21 वीं सदी के कहानी साहित्य में महानगरीय – आमलापुरे विश्वनाथ	120
41	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में नारी चित्रण – श्री. खरटमोल धोंडिराम	122
42	इक्कीसवीं सदी का हिन्दी काव्य – डॉ.प्रीति शर्मा–भट्ट	124
43	महीप सिंह की कहानियों में महानगरीय बोध – श्री तुकाराम आडे	127
44	'फाँस' उपन्यास में चित्रित किसान जीवन संघर्ष – प्रा. राजेगोरे आर.व्ही.	130
45	इक्कीसवीं सदी में 'बाजार की एक रात' – डॉ. अबासाहेब राठोड	132
46	प्रवासी कहानी साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंध ... – सहा.प्रा. अमर आनंद आलदे	135

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

RESEARCHJOURNEY

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर
ISSN : 2348-7143
February-2019

इक्कीसवीं सदी में 'बाजार की एक रात'

डॉ. अबासाहेब राठोड
सदस्य, हिंदी अभ्यास मंडल,
डॉ. बा. आं. म. विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

==========

'बाजार की एक रात' मुशर्रफ आलम जौकी का एक ऐसा कहानी संग्रह है जो 'बाजार' से जुडा हुआ है और बाजारीकरण के चलते यह 'बाजार' भी परिवर्तित हो रहा है, बदल रहा है। इस बाजार के केंद्र में है पैसा जो अपने ऊँगलियोंपर आदमी को नचाने की क्षमता रखता है। आज गाँव तेजी से तरक्की कर रहा है, झूग्गी झोपडियाँ टूट रही है और वहाँ पक्के मकान बन रहे है, गाँवों में भी परिवर्तन नजर आ रहा है जो टूटकर–बिखरकर नगर–शहर–महानगर में तब्दिल होते नजर आ रहे है। आज इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य की सोच किस तरह नये–नये आयामों की ओर अग्रसर हो रही है जिससे कई संभावनाओं को पाठकों तक पहूँचाने में वह अपनी भूमिका पूरी इमानदारी से निभा रही है। प्रस्तुत संग्रह की कहानियाँ इसी तरह एक नये आयाम के साथ पाठकों से मुखातिब होती नजर आती है जिसमें 'बाजार' से जुडी संवेदना को हम करिब से देख सकते हैं।

'बाजार की एक रात' कहानी संग्रह की पहली कहानी का शिर्षक ही है 'बाजार की एक रात'। मुशर्रफ आलम जौकी ऐसे कहानिकार है जो पाठकों को भटकने नहीं देते। भलेही कहानी के पात्रों को खुली छूट है कहींपर भी भटकने की मगर पाठक पर बस चला है तो जौकीजी का वे जहाँ हमें ले जाएँगे हम चुपचाप उनके पीछे–पीछे वहाँतक पहूँच जाते है। प्रस्तुत कहानी को जौकीजी ने तीन लघु शीर्षक के माध्यम से प्रस्तुत किया है क्रमशः वे बाजार वेश्या एवं कंडोम के नाम से है। सबसे पहले हम 'बाजार' पर विचार करेंगे।

'बाजार' वह है जहाँ चीजें बेची जाती है। और आज बाजार का दायरा इस कदर फैलता जा रहा है जिसके तहत विश्व भी छोटा प्रतित हो रहा है। जिस कारण पूरातन चोला उतारकर हमें नये चोले के साथ, नये विचारों के साथ, नयी वस्तू के साथ, नयी उम्मिद के साथ बाजार में प्रवेश करना पडता है जो आसान भले लगे पर आसान नहीं है। बाजार ने भले नई चीजों की पहचान करादी है पर मनुष्य की पहचान मात्र भूलादी है। इतना ही नहीं देशी ब्रान्ड भूला दिया है और वहाँ विदेशी ब्रान्ड की बाढ आई हुई है। यहाँ हम भारतीय सभ्यता और संस्कृति को भूलते जा रहे हैं और विदेशी विकृति को अपनाने में गर्व महसूस कर रहे है। आज बाजार के माईने बदल रहे हैं गाँव हो, शहर हो या महानगर हो बाजार के साथ चीजें तो बदल ही रही है पर साथ–साथ लोग भी बदल रहे है। यह बदलाव हुआ है बाजार के कारण क्योंकि आज बाजार में जो कुछ भी है वह नया है और इस नये के चलते लोग पूराणे को भूलते जा रहे हैं। चाहे वह गाँव हो, नगर हो या महानगर। यहाँ लेखक एक नसिहत देता नजर आता है कि बाजार बदल रहा है तो हमें भी उसके साथ बदलना चाहिए। कहानी में इसी संदर्भ में लेखक कहता है– "अब दूर–दराज कुछ भी नहीं है। गाँव–कस्बे सबको विदेशी वस्तुएँ ही चाहिए–और हाँ, बाजार में हम वही कुछ बेचतें हैं, जिसके ऑर्डर आते हैं। जो सिक्का चलता है, हम वही लेते हैं–इस बार हँसकर कहा गया था–बाजार बदल गया है। तुम भी अपने को बदल डालो।"[1] (मुशर्रफ आलम जौकी–बाजार की एक रात, बाजार की एक रात पृ.02)

लेखक बाजार के बदलते रूप से अचंभित है। उसे लगता है कि यह बाजार अब उसके लिए नहीं है जो पहले हुआ करता था–होटल में रहना, किसी वेश्या को रूम में लाना, रातभर उसके साथ ऐश करना, दूसरे दिन बडा माल–ऑर्डर लेकर घर लौटना। पर अब बाजार बदल गया है साथ धंदे की दुकानें भी। पहले गंदी बस्तियों में देह व्यापार चलता था पर अब वह आलिशान बंगलेनुमा इमारत में चलता है। जो दल्ला पहले स्वयं चलकर लेखक की खातिरदारी करता वही आज उस बंगले में बाजार चला रहा है। इसकी सच्चाई को बयाँ करता वह लेखक से कहता है– "जगह नहीं बदलती साहब–बस रंग–बदल जाते हैं। सैगन बदल जाते हैं। रूप बदल जाते हैं और बाजार तो बदलने के लिए ही होता है साहब...."[2] (मुशर्रफ आलम जौकी–बाजार की एक रात, बाजार की एक रात पृ.03)

यहाँ हमें इस बात का पता चलता है कि बाजार के साथ आदमी ने भी अपने आप को बदलना चाहिए। नही तो हम वहीं–के–वहीं रह जाते है बीना किसी वजूद के। इसलिए बाजार के अनुरूप ही माल होना चाहिए अन्यथा हमारी नैया कभी–भी डूब सकती है। दल्ले ने अपने आलिशान चकले में एक से बढकर एक सुंदर अप्सराओं को रखा था पर उसके दाम भी वैसे ही चुकाने पडते थे। इस ताम–झाम में अपनी दाल नहीं गलने वाली ये सोच मानों 'अंगुर खट्टे है।' इस मुहावरे की तरह उसकी हालत हो जाती है। वसुंधरा को देख लेखक उसका चुनाव करना चाहता था पर उसकी खूबसुरती को देख एक बडे बाजार की परिभाषा को दोहराता है। 'मँहगी होगी' ऐसी अप्सराएँ अपने लिए नहीं है, अपने लिए तो कोई देसी 'कस्बी' ही चलेगी कहकर जाना चाहता है पर दल्ला उसे धीरज दे कहता है घबराइये मत साहब आप सिर्फ लडकी पसंद करें। एक निश्चित बोली पर वसुंधरा का सौदा बन जाता है और उसे लेकर वह होटल चला आता है।

'बाजार की एक रात' कहानी का दूसरा लघु शिर्षक है 'वेश्या'। बाजार की चकाचौंध में थकान को मिटाने का साधन या रात को रंगीन एवं यादगार बनाने के लिए लेखक वसु (वसुंधरा) का चुनाव करता है जो बेहद खुबसूरत है। जैसे ही होटल के कमरेमें पहूँचती है वह लेखक से कहती है–

"कपडे उतारूँ"

"नहीं। अभी नहीं.... अभी तो रात पडी है.... "[3]

(मुशर्रफ आलम जौकी–बाजार की एक रात, बाजार की एक रात पृ.05)

लेखक उत्तेजित हो रहा था और रोमांटीक होने के लिए शब्द कहाँ से लाए सोच रहा था। तब वह उसके शहर से शुरूआत करता है पर लडकी जवाब देती है कि यह शहर उसका नहीं। पश्चात नाम पर चर्चा हुई मगर वह भी उसका नहीं था और जो लिबास उसने पहना था वह भी उसका नहीं था ये उसे कल वाले पार्टी ने गीफ्ट दिया था। मतलब 'वेश्या' का अपना खुद का कोई वजूद नहीं होता जो कुछ भी होता है दूसरों का होता है। बाजार में पूराने से अधिक नये की मांग होती हैं। तेजी से बदलते बाजार का परिहास करते वेश्या कहती है– इंसान भूमंडलीकरण के मोह–पाश में ऐसा जकड गया है कि इंसानियत ही कहीं गुम हो गई है और कम्प्यूटर मानों बडे–बडे हजारों–करोडों दिमागों को निगल रहा है। हम ग्लोबल गाँव की बात करते है, जो इक्कीसवी सदी में शहरों को ही नहीं गाँव को भी प्रभावित कर रहा है। यदि ईसी रफ्तारसे परिवर्तन होता रहेगा तो ग्लोबल गाँव में हड्डियाँ ही हड्डियाँ बचेगी हम तुम नहीं बचेंगे। लेखक वेश्या के इन विचारों से हतप्रभ है इस बात को वसुंधरा भाँप जाती है और खिल–खिलाकर हँसती हुई कहती है– "अब ये मत पूछना कि वेश्या होकर.... वेश्या सब कुछ कर सकती है। तुम्हें शांत करने से लेकर तुम्हारे ग्लोबल गाँव तक के सन्नाटे पढ सकती है। छोडो। कीमत दी है तुमने। तुम्हारी रात का सत्यानाश नहीं करूँगी...."[4] (मुशर्रफ आलम जौकी–बाजार की एक रात, बाजार की एक रात पृ.08

यहाँ एक बात सामने आती है कि वेश्या यह पेशा वसुंधरा ने मजबूरी में स्वीकार किया हुआ है। वह बदलती हुई दुनिया से वाकिफ है, वैश्वीकरण के चलते बाजार के नये रूप से भी परिचित है बस उसने स्वयं को उस साचे में ढालने का प्रयास किया है बीना किसी शर्त के। यहाँ उसके पास अपना ऐसा कुछ भी नहीं है, कुछ भी, फिर भी वह जिंदा है इस बात को लेकर लेखक आश्चर्यचकित है।

अब हम मुडते है कहानी के तीसरे लघू शीर्षक की ओर जिसे 'कंडोम' नाम से प्रस्तुत किया गया है। वेश्या और कंडोम का रिश्ता मानो चोली दामन का रिश्ता है। चाहकर भी यदि वह इससे दूर रहती है तो उसे इसके लिए बहुत बडी कीमत चुकानी पड सकती है। 'कंडोम' शीर्षक के अंतर्गत कहानी आगे बढती है जो वसुंधरा की सही पहचान को पाठकों तक पहूँचाती है। लेखक उसके जिस्म को देख मचल जाता है। जिसकी उपमा वह फ्रांस की शिंगूरा फिश से करता है। जिसका वर्णन कहानी में हुआ है जैसे – "सफेद टी शर्ट उसके मखमली बदन से अलग हो चुकी थी। वो सिर से पाँव तक आग थी। जल–मछली। नहीं जल मछली नहीं..... फ्रांस की शिंगूरा फिश के बारे में सुना था– एक पानी में तैरने वाली औरत....।"[5] (मुशर्रफ आलम जौकी–बाजार की एक रात, बाजार की एक रात, पृ.08,09)

यहाँ वसुंधरा के सौंदर्य को कई विशेषणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है जिसमें उसकी गर्दन किल्यूपेटस की तरह बताई गई है, जिसका शरीर तना हुआ तथा गठा हुआ मानों कमान से तीर छुटने भर की देर हो। इसतरह बला की खुबसूरत वसुंधरा के पास वह सबकुछ है जो एक पुरूष को चाहिए पर वसु का कहना है कि ये जिस्म, ये चेहरा उसका नहीं है। लेखक को लगता है कि आखिर इसका रहस्य है तो क्या है? तब वसु लेखक को इस सच्चाई से रू–ब–रू कराती है जैसे–

"सुनो, इसमें कुछ भी नया नहीं है। यह चेहरा यहाँ तब माँ बताती है, उसका एक बॉय–फ्रेंड था.... और यहाँतक का हिस्सा.... माँ बताती है कि –और यहाँ से यहाँतक मेरे बाप का.... माँ मेरे हाथ की ऊँगलियों के बारे में बताती थी कि वो तो बिल्कुल उसकी ऊँगलियों जैसी...."6 (मुशर्रफ आलम जौकी–बाजार की एक रात, बाजार की एक रात पृ.09)

'वेश्या' एक ऐसा नाम है जो सभ्य समाज में 'बदनाम' माना जाता है। मगर यही तो वह सभ्य समाज है जो इन वेश्याओं का शोषण करता है, इन्हें इस रास्तेपर चलने के लिए मजबूर करता है। क्या कोई स्त्री थोडे ही 'वेश्या' के रूप में पैदा होती है? वह तो परिस्थिति वश, मजबूरी में इस पथ पर चलती है। वसु अपने इसी सत्य को व्यक्त करती है, जिस कारण उसका ऐसा कुछ है ही नहीं जिसे वह 'अपना' या 'ये मेरा है' कह सके। नाम से लेकर पहने वस्त्र तक गाँव से लेकर उसके हुस्न तक सब दूसरों का है या दूसरों जैसा है। उसकी अपनी कहने वाली बस एक वस्तू है जिसका नाम है 'कंडोम'। पर्स में हाथ डाल निकालते हुए कहती है– "यह मेरा है। सिर्फ मेरा, इसे में साथ लेकर चलती हूँ।"7 (मुशर्रफ आलम जौकी–बाजार की एक रात, बाजार की एक रात पृ.09)

अंत में हम कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी में बाजार बहुत बदल गया है या यूँ कहें उसने पूराणे प्रतिमान तोड दिये है और नये अमानविय प्रतिमानों को तवज्जू दे रक्खी है। मुशर्रफ आलम जौकी जी ने 'बाजार की एक रात' प्रस्तुत कहानी के माध्यम से 'बाजार', 'वेश्या' तथा 'कंडोम' इन तीन लघु शिर्षकों के जरीये उस सच्चाई को बयाँ किया है जो बाजार से जुडी है। जहाँ इंसान या इंसानियत की नहीं बल्कि वस्तु की किमत लगती है फिर वह वस्तु आदमी या स्त्री ही क्यों न हो, उसकी भी बोली लग जाती है। क्या बाजार इतना गिर चुका है?

❖❖❖